कलीसिया परिशिष्ट 12

[कलीसिया निर्माण की सेवकाई]
अतिरिक्त आत्मिक वरदान

मैनुएल 7 के 35 अध्याय में वर्णन किये हुए पवित्र आत्मा के प्रथम 5 वरदानों को देखें।

6. अगुवे व प्रबन्धक।

(1) एक अगुवा (रोमियों 12:8)

"एक अगुवा" कलीसिया में एक असाधारण क्षमता(योग्यता) या एक साधारण अनुज्ञापत्र(कार्य,ऑफिस, निर्धारित ज़िम्मेदारी) है। अगुवा *स्वयं आगे आगे चलकर, दिशा निर्देश देकर और एक आदर्श प्रस्तुत करके सबकी अगुवाई करता है*। यह विशेषतौर पर कलीसिया के प्राचीन का काम(या मसीही संगठन के अगुवे का काम) होता है।

(2) प्रबन्धक (1 कुरिन्थियों 12:28)

"एक प्रबन्धक" कलीसिया में एक असाधारण क्षमता(योग्यता) या एक साधारण अनुज्ञापत्र(कार्य,ऑफिस, निर्धारित ज़िम्मेदारी) है। एक प्रबन्धक अपनी बुद्धिमानी के द्वारा कठिन परिस्थितियों में कलीसिया की प्रोत्साहित करता है। कलीसिया में ऐसे भी प्राचीन थे जो बिना प्रचार करने तथा शिक्षा देने के बोझ के ही मण्डली के कामों को किया करते थे। बहुत से सहायकों ने अलग अलग तरीकों से मण्डली के अतिरिक्त प्रशासनिक कार्यों को अपने ऊपर ले लिया, वहीं प्रबन्धकों ने मण्डली में बहुत से आत्मिक कामों को करने के लिए अपने आप को दे दिया।

7. सेवा व सहायता करना।

(1) सेवा करना (रोमियों 12:7)

"सेवा करना" कलीसिया में एक असाधारण क्षमता(योग्यता) या एक साधारण अनुज्ञापत्र (कार्य,ऑफिस, निर्धारित ज़िम्मेदारी) है, उदारहण के लिए एक डीकन। *सेवक भिन्न प्रकार की ज़रूरतों को देखते और उन्हें पूरा करते हैं।*

(2) सहायक (1कुरिन्थियों 12:28)

"सहायता करना"एक असाधारण क्षमता है। सहायक विभिन्न प्रकार के कार्यों में सहायता प्रदान करता है।

8. बुद्धि की बातें, ज्ञान की बातें, भजन या प्रोत्साहित करने वाली बातें बोलना।

(1) बुद्धि की बातें बोलना(1कुरिन्थियों 12:8)

"बुद्धि की बातों को बोलते" समय उसकी विषय वस्तु में ही बुद्धि पायी जाती है। यह एक असाधारण इच्छा और योग्यता है जिसके द्वारा आप लोगों को *उच्चतम लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सर्वोच्च उपाय बताते हैं।* इस आत्मिक वरदान को प्राप्त लोग दूसरों को *सलाह देते हैं कि वे कैसे परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन व्यतीत कर सकते हैं।*

(2) ज्ञान की बातें बोलना (1 कुरिन्थियों 12:8)

"ज्ञान की बातें बोलते "समय उसके विषय वस्तु में ही ज्ञान पाया जाता है। यह एक असाधारण इच्छा और योग्यता है जिसके द्वारा आप लोगों को *पहले से छुपी हुई बातों के मतलब को स्पष्टता से बता पाते हैं।* जिन लोगों को यह आत्मिक वरदान को प्राप्त होता है वे लोगों को परखते हैं *कि कोई विशेष शिक्षा अच्छी या स्वीकृत हैं की नहीं अर्थात वह बाइबल से प्राप्त परमेश्वर के प्रकाशन का समर्थन करती है कि नहीं।*

(3) भजनों को गाना (1 कुरिन्थियों 14:26)

"भजन करना" एक असाधारण इच्छा और योग्यता है जिसके अन्तर्गत आप पुराने गीतों, नये भजनों और आत्मिक गीतों के द्वारा दूसरों तक अपनी बात पहुंचाते हो(इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)। जिन मसीहियों को यह आत्मिक वरदान प्राप्त होता है वे गीतों, कविताओं और संगीत के द्वारा परमेश्वर के संदेश को दूसरों तक पहुंचाते हैं।

(4) प्रोत्साहित करने वाली बातों को बोलना (रोमियों 12:8)।

"प्रोत्साहित करने वाली बातों को बोलना" एक असाधारण इच्छा और क्षमता है जिसके द्वारा हम मसीहियों को उन कामों को करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जो बाइबल करने के लिए कहती है, चाहे वह सार्वजनिक तौर पर संदेश देने के द्वारा हो या फिर उनसे व्यक्तिगत तौर पर बातचीत करके । जिन मसीहियों के पास यह आत्मिक वरदान होता है वे दूसरे मसीहियों की व्यक्तिगत वृद्धि और सेवा करने के क्षेत्र में सलाह देते हैं। वे मसीहियों को बाइबल की शिक्षाओं का अपने जीवन व अपने चरित्र का निर्माण करने में इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वे मसीहियों को मसीहियों की तरह व्यवहार करने के लिए उत्साहित करते तथा उन्हें विश्वास के कदम उठाने के लिए कहते हैं।

9 भेंट या सहयोग देना।

"देना" (रोमियों 12:8) एक असाधारण इच्छा और योग्यता है जिसके द्वारा हम अपनी सम्पत्ति को लोगों की भलाई और परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। जिन मसीहियों को यह आत्मिक वरदान प्राप्त होता है वे परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए धन या सम्पत्ति को अर्जित करने में अपना पूरा ध्यान लगाते हैं। वे परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने के लिए अपने धन या सम्पत्ति को कलीसिया के मसीहियों(अपनी, दूसरी या विदेशी कलीसिया में) और मसीही संगठनों को देते हैं।

10. दया करना।

"दया करना"(रोमियों 12:8) दूसरों की जरूरतों पर ध्यान देने तथा उन्हें शान्ति देने व उनकी सहायता करने ही एक असाधारण इच्छा और योग्यता है। जिन मसीहियों में यह आत्मिक वरदान पाया जाता है वे अधिकांश अच्छे निरीक्षक व अच्छी तरह से गौर करने वाले होते हैं। वे बहुत लोगों की परिस्थितियों और निराश और चोटिल,शोषित व दबे हुए, बीमार व लाचार, बूढ़े और दुर्बल, तथा भयभीत व शोकित लोगों के विचारों व उनकी भावनाओं और जरूरतों को समझ जाते हैं। उनमें उन लोगों की जरूरतों को पहिचानने तथा उनकी सहायता करने की योग्यता होती है।

11. विश्वास।

"विश्वास" (1 कुरिन्थियों 12:9) परमेश्वर के लिए किसी विशेष काम को करने की एक असाधारण इच्छा और योग्यता है। इस वरदान को प्राप्त किये हुए मसीही लोग उस समय भी परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं जब परमेश्वर उन्हें कोई कठिन काम करने के लिए बुलाता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर उनसे विदेश में जाकर काम करने के लिए कह सकते हैं(इब्रानियों 11:8-10), दबाव व सताव की स्थिति में धीरज धरने के लिए कह सकता है(इब्रानियों 11:25-27), अन्यायी समाज में न्याय लाने के लिए कह सकता है(इब्रानियों 11:33)। जिन मसीहियों में यह आत्मिक वरदान होता है वे परमेश्वर पर चमत्कार करने के लिए विश्वास करने तथा उनके द्वारा बड़े-बड़े काम करने के लिए विश्वास करते हैं। वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर पहाड़ों जैसी रूकावटों को उनके रास्ते से हटा सकता है(मरकुस 11:22-23) और उनके लिए मनुष्यों की दृष्टि में असम्भव दिखने वाले कामों को कर सकता है(रोमियों 4:19-21) और शत्रुओं से भी उनका मेल करा सकता है (नीतिवचन 16:7)। वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उनको वे चीज़ें प्रदान कर सकता है जो स्वाभाविक तौर पर असम्भव जान पड़ती हैं। जैसे नूह,अब्राहम और मूसा ने अपने विश्वास के द्वारा परमेश्वर की इच्छा को वास्तविकता बना दिया।

12. चंगा करने का वरदान।

"चंगा करने का वरदान"(1कुरिन्थियों 12:9,30) दूसरों की विभिन्न शारीरिक व आत्मिक बीमारियों को चंगा करने की एक असाधारण इच्छा और योग्यता है। जिन लोगों में इस प्रकार के वरदानों में से एक होता है उन्हें परमेश्वर लोगों को चंगा करने के लिए एक मानवीय उपकरण के जैसे इस्तेमाल करते हैं। सारी सच्ची चंगाईयां ईश्वर की ओर से ही मिलती है इसलिए उन्हें आलौकिक चंगाई कहा जा सकता है।

13. चमत्कार व अद्भुत कार्य करना।

"चमत्कार व अद्भुत कार्य करना"(1कुरिन्थियों 12:10,28-29) आलौकिक कामों को करना(2कुरिन्थियों 11:23-28) या असाधारण कामों व चमत्कारों को करना, एक असाधारण इच्छा व योग्यता है। इन चमत्कारों का मकसद बाइबल के परमेश्वर व उसके प्रकाशन की वास्तविकता की ओर लोगों के ध्यान को आकर्षित करना है और खास तौर पर यीशु मसीह पर नियमित तौर पर विश्वास करने को मज़बूती प्रदान करता हैं जिसका परिणाम अनन्त जीवन होता है (यूहन्ना 20:30-31),लेकिन इसके साथ इसका मकसद जीवित परमेश्वर के विद्यमान होने और बाइबल के प्रकाशनों पर के प्रति विश्वास को जागरूक करना भी है।

बाइबल में तब तब चमत्कार हुए हैं जब जब परमेश्वर ने स्वयं को और अपनी सच्चाई को निम्नलिखित उपायों से प्रगट किया है:

- मूसा(उदारहण. दस आज्ञाएं, लाल समुद्र का पार करना, चट्टान से पानी का निकलना, इत्यादि)।
- पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता(खास तौर पर एलिय्याह और एलीशा)
- यीशु मसीह
- नये नियम के प्रेरित(मत्ती 10:1,8; लूका 10:18-20;प्रेरितों 2 :43; 2 कुरिन्थियों 12:12; इब्रानियों 2:4)।

14. आत्माओं की परख करना।

"आत्माओं को परखना" (1कुरिन्थियों 12:10) एक असाधारण इच्छा और योग्यता या बुलाहट है जिसके द्वारा आप आत्माओं में अन्तर को पहिचान सकते हैं। जिस समय तक नया नियम नहीं लिखा गया था, मसीही लोग निम्नलिखित पहलुओं को परखने के लिए इस वरदान का इस्तेमाल किया करते थे:

- ईश्वरीय कार्य है या शैतानी(1यूहन्ना 4:1-6; प्रेरितों 13:6-12)
- आत्मिक या मनोवैज्ञानिक
- उन्नति करने वाला हैं या विनाशकारी
- सत्य या झूठ।

ये मसीही जन परख सकते हैं कि जो कुछ नये नियम का भविष्यद्वक्ता कह रहा है वह सत्य है या झूठ और कलीयिसा ने उन शिक्षाओं पर ध्यान देना चाहिए या नहीं(1 कुरिन्थियों 14:29)। वे पहचान सकते हैं कि कलीसिया में कोई विशेष आत्मिक वरदान सच्चा है, गलत, गैर ज़िम्मेदार या झूठा और शैतानी है।

दुष्ट आत्माएं दुष्टात्मा ग्रसित लोगों में होकर तथा उन लोगों में होकर काम करती हैं जो अन्धविश्वास व तन्त्र मन्त्र पर विश्वास करते हैं। दुष्टात्माएं विशेष तौर पर उन कलीसियाओं में काम करती हैं जिनमें अन्यजातियों में से आये हुए नये विश्वासी होते हैं(1यूहन्ना 4:1)। ऐसी आत्माएं अपना प्रदर्शन झूठी भविष्यद्वाणियों के द्वारा तथा किसी एक विशेष चमत्कार को प्रदर्शित करके करती हैं(प्रेरितों 10:13-16)। शैतान द्वारा आत्मिक वरदानों की नकल व मसीह के कार्य दोनों ही इस संसार में विद्यमान हैं(मत्ती 24:23-24; प्रेरितों 20:29-31; 2 कुरिन्थियों 11:13-15)।

15. अन्यान्य भाषाएं।

(1) प्रेरितों के काम में भाषाएं(अन्यभाषाएं)।

(1) प्रेरितों के काम पुस्तक में अधिक भाषाओं या अन्यान्य भाषा में बोलना एक *असाधारण योग्यता थी, जिसके द्वारा दूसरों को परमेश्वर तथा उसके अद्‌भुत कार्यों के बारे में बताया जा सकता था* (प्रेरितों 2:7-11)।

इस आत्मिक वरदान का उद्देश्य योएल 2:28-29 में की गयी ऐतिहासिक भविष्यद्वाणी का पूरा होना था, जिसे पवित्र आत्मा के वास्तव में उण्डेले जाने तथा उसकी उपस्थिति की वास्वतिवकता को प्रमाणित करने के लिए पहले से दिया गया था (प्रेरितों 2:16)। मानव इतिहास में यह पवित्र आत्मा के प्रत्यक्ष और श्रवणीय घटना थी, पहले तो यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले सारे यहूदियों के लिए ,फिर यीशु पर विश्वास करने वाल सामरियों के लिए (आधे-यहूदियों),फिर यीशु पर विश्वास करने वाले अन्यजातियों में से(सारे संसार भर में रहने वाले गैर यहूदियों में से)(प्रेरितों 10:11,15) (प्रेरितों 1:8)। प्रेरितों के काम 2 अध्याय में यह चिन्ह प्रत्यक्ष (आग की सी फटती जीभें)और श्रवणीय (प्रचण्ड आधी का सा शब्द सुनाई दिया)।

प्रेरितों के काम की पुस्तक उन कामों का *वर्णन करती या उन कामों को जोड़ती है* जो परमेश्वर बीते समय में उद्धार के निमित्त किया था। प्रेरितों की पुस्तक यह *शिक्षा नहीं देती* है कि वर्तमान जगत में इन घटनाओं का होना जरूरी है!

बाइबल हमें *बताती* है कि पवित्र आत्मा प्राप्त करने का सामान्य प्रत्यक्ष चिन्ह कलीसिया का उद्‌गमन (1कुरिन्थियों 12:12-13; प्रेरितों 2:42) और आत्मा के फलों की प्रत्यक्ष उपस्थिति, विशेष तौर पर विश्वासियों के जीवन में प्रेम है(गलातियों 5:22)! चाहें कलीसिया में अन्य आत्मिक वरदानों में कमी हो जाए लेकिन प्रेम कभी कम नहीं होना चाहिए (1कुरिन्थियों 13:1-8)! बाइबल यह शिक्षा नहीं देती है कि दूसरी ज्ञात व समझने योग्य भाषा में भविष्यद्वाणी के साथ साथ पवित्र आत्मा का मिलना (पवित्र आत्मा का बपतिस्मा)या प्राप्त होना जरूरी होता है)! (बाइबल में कहीं पर ऐसी शिक्षा नहीं दी गयी है कि अन्यान्य भाषा में या स्वर्गदूतों का भाषा बोलना पवित्र आत्मा में बपतिस्में का प्रमाण है!)

(2) कुरिन्थियों को लिए प्रथम पत्र में अन्यान्य भाषा।

कुरिन्थियों की पत्री में (1 कुरिन्थियों 12:10,28-30;13:1,8-11; 14:1-33) अन्यान्य भाषा में बात करना अपनी बात को *अनजानी, अज्ञात तथा समझ में न आने वाली भाषा में* (स्वर्गदूतों की भाषा) *व्यक्त करने की एक अति असाधारण योग्यता है।* इस घटना में आग की प्रत्यक्ष जीभें या प्रचण्ड आंधी का स्वर नहीं सुनाई दिया। क्योंकि अन्यान्य भाषा के बोले जाने को सुना तो जा सकता था, लेकिन वह समझ से परे थी जिसकी वजह से कलीसिया में दुविधा खड़ी हो गयी थी।

पौलुस *अचानक से किसी अन्यभाषा में बात करने की बात नहीं करता है, वरन वह स्थायी तौर पर इस भाषा को बोलने की योग्यता के बारे में* तथा इस घटना को नियंत्रित करने के बारे में बात करता है। वाक्य "जो कोई अन्यान्य भाषा में बात करता है" (1 कुरिन्थियों 14:13) का अर्थ किसी ऐसे जन से नहीं है जो अचानक से किसी सभा में पवित्र आत्मा में भरकर अन्यान्य भाषा में बोलने लग जाएं। परन्तु वह वाक्य उस व्यक्ति के बारे में बताता है जिसमें स्थायी तौर पर अन्यान्य भाषा में बोलने की योग्यता है और जो अन्यान्य भाषा में नियमित तौर पर बोलता है। यह बात 1 कुरिन्थियों 14 पद 26,27 और 28 में सही साबित होती है। इसी कारण पौलुस भी कलीसिया की सभा में अन्यान्य भाषा बोलते समय *कुछ सीमाओं को* ध्यान में रखने की सलाह दे सकता है-और यह तब तक सम्भव नहीं हो सकता था जब तक कि कोई जन अचानक से पवित्र आत्मा में भरकर अज्ञात भाषा में बात नहीं करने लगा होता!

कुरिन्थियों की कलीसिया में आत्मिक वरदानों का प्रगटीकरण नये नियम के प्रारम्भिक काल में हुआ था, उस समय तक नये नियम की घटनाओं को पूरा लिखा नहीं गया था। उस समय पर बहुत सी गलतियों और झूठी शिक्षा का सामने आना लाज़मी था। कुरिन्थियों की मण्डली नये विश्वासियों से मिलकर बनी थी जिसमें से ज्यादातर लोग

अन्यजातियों में से ही थे जिन्हें उन समस्याओं और घटनाओं में संघर्ष करना पड़ता जो समस्याएं उनके गैर मसीही माहौल में खड़ी हुआ करती थी। कुरिन्थ की कलीसिया के लोग "आत्मिक वरदानों को प्राप्त करने में जिज्ञासु नहीं थे" अर्थात उनमें "आत्मिक वरदानों को पाने की धुन नहीं थी" वरन उनमें केवल आत्माओं को (गैर-मसीही)पाने की धुन थी (Greek: zélótai este pneumatón) (1 कुरिन्थियों 14:12)। वे शायद यह विश्वास करते थे कि विभिन्न आत्माओं के द्वारा भिन्न भिन्न वरदान मिलते हैं। लेकिन प्रेरित पौलुस ने शिक्षा दी थी कि अलग अलग वरदान एक ही पवित्र आत्मा के द्वारा दिये जाते थे(1 कुरिन्थियों 12:4,11)। वह कुरिन्थियों के मसीहियों को शिक्षा देता है कि वे ऐसे वरदानों को प्राप्त करने का प्रयास करें जिससे कलीसिया में दुविधा और गड़बड़ी उत्पन्न होने की बजाय दूसरों की उन्नति हो(1 कुरिन्थियों 14:33,40)। इसलिए कुरिन्थ की कलीसिया के भीतर इस गड़बड़ी व पापमय परिस्थिति में भविष्यद्वाणी के वरदान और उसके संपूरक, आत्माओं की परख करने वाले वरदान की जरूरत थी(1 कुरिन्थियों 12:10)।

कुरिन्थियों की पत्री हमें बताती है कि अन्यान्य भाषा में बोलना कलीसिया में बहुत सी समस्याओं में से एक समस्या थी। उन जमाने में यहूदी धर्म और ग्रीक दर्शन का बहुत गहरा प्रभाव था(1 कुरिन्थियों 1 व 2), गुट बाज़ी,फूट, झगड़े, आत्मिक अपरिपक्वता (1 कुरिन्थियों 3), मृतकों के साथ शारीरिक यौन सम्बन्ध(1 कुरिन्थियों 5),अन्यजातियों के सामने एक दूसरे पर मुकद्दमा करना और अपनी आज़ादी का गलत इस्तेमाल करना(1 कुरिन्थियें 6), तलाक (1 कुरिन्थियों 7)अन्यजातियों के साथ मिलकर उनके उत्सवों में प्रतिभागी होना और मूर्तियों को चढ़ाए मांस को खाना (1 कुरिन्थियों 8), प्रेरितों के अधिकार को लेकर अभद्र बातों को बोलना(1कुरिन्थ 9),स्त्रियों द्वारा अपने स्थान का शोषण करना(1 कुरिन्थियों 11), नुकसान देय मसीही सभाएं तथा प्रभु भोज का अनुचित रीति से सेवन(1 कुरिन्थियों 11) अन्यान्य भाषा की चाह में आत्माओं को पाने की धुन में लगना(1कुरिन्थियों 12-14) और मृतकों में से जी उठने का इनकार करना(1 कुरिन्थियों 15)!

कुरिन्थियों की कलीसिया की समस्या यह थी कि वहां के लोगों ने अन्यान्य भाषा में बोलने के वरदान को ज्यादा महत्व देना *प्रारम्भी* कर दिया था(1 कुरिन्थियों 12:30) और कलीसिया की सभाओं में अन्यान्य भाषा बोले जाने से दुविधा, गड़बड़ी और मतभेद उत्पन्न हो गये थे(1 कुरिन्थियों अध्याय 14)। इसलिए पौलुस ने आत्मिक वरदानों (ग्रीक: करिश्मा)के मामले को सम्बोधित किया। सबसे पहले उसने बताया कि आत्मा के वरदानों (आत्मिक वरदान, सेवाकाई और काम करने में)में अति विविधता है(1 कुरिन्थियों 12)। उसके बाद वह कहता है सभी आत्मिक वरदानों में प्रेम सर्वश्रेष्ठ है (1 कुरिन्थियों 13)। उसके बाद वह अन्यान्य भाषा और भविष्यद्वाणी के बीच अन्तर को बताता है(1 कुरिन्थियों 14)।

ऐसा प्रतीत होता है कि कुरिन्थियुों की कलीसिया में जिन लोगों को आत्मिक वरदान प्राप्त थे वे लोगों का ध्यान पाने के लिए उन वरदानों का गलत इस्तेमाल कर रहे थे। जबकि परमेश्वर ने उन्हें यह आज्ञा दी थी कि कलीसिया में सारे काम क्रम से किये जाए, लेकिन ये सदस्य असम्मानित व अभद्र व्यवहार कर रहे थे। उन्होंने कलीसिया की व्यवस्थित सभाओं को अव्यवस्थित बना डाला। शान्ति की बजाय उन सभाओं में चिड़चिड़ाहट,दुविधा और अव्यवस्था का बोलबाला होने लगा (1 कुरिन्थियों 14:33,40)। हालांकि प्रेरित पौलुस आत्मिक वरदानों को खासी अहमियत देता था, लेकिन सभाओं में गड़गड़ी फैलने की वजह से उसने मण्डली में इन वरदानों का अभ्यास करने से मना कर दिया। उसने आज्ञा दी कि सारे संसार भर की कलीसियाओं की सभाओं में जो कुछ भी होता है, उससे कलीसिया, उसके सदस्यों और आगन्तुकों की उन्नति होनी चाहिए। जिस आजादी के साथ हर एक मसीही अपने आत्मिक वरदानों का

इस्तेमाल कर सकता है वह प्रेम, उन्नति और सेवा के दायरे में होनी चाहिए। मसीहियों को उन सीमाओं के अन्तर्गत सीमित रहना चाहिए जिन्हें पौलुस ने बाइबल में निर्धारित कर दिया है(1 कुरिन्थियों 14:26-40)।

इस तरीके से प्रेरित पौलुस अन्यान्य भाषा को भी अन्य वरदानों में से एक ठहरा कर उसे उचित स्थान प्रदान करता है। वह विशेष तौर पर अन्यान्य भाषा का वरदान प्राप्त मसीहियों को अन्यान्य भाषा में बोलने (जो मसीही लोग अन्यान्य भाषा में बात किया करते थे),प्रार्थना करने और आत्मिक गीत गाने के लिए उत्साहित करता है लेकिन केवल आत्मा में ही नहीं वर समझ के साथ भी(समझने योग्य भाषा में)। 1 कुरिन्थियों 14:13-19 में लिखा है, "इस कारण जो अन्य भाषा बोले (present continuous tense), तो वह प्रार्थना (present continuous tense) करे *(a command)*, कि उसका अनुवाद भी कर सके (जो बात वह आत्मा में होकर कह रहा है उसे वह तुरन्त अपनी मात्र भाषा में बोले) । इसलिए यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। सो क्या करना चाहिए मैं आत्मा से भी (future tense) प्रार्थना *करूंगा;* और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा, मैं आत्मा से गाऊंगा और बुद्धि से भी गाऊंगा। (नहीं तो) यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन क्योंकर कहेगा? इसलिये कि वह तो नहीं जानता, कि तू क्या कहता है? तू तो भली भांति से धन्यवाद करता है परन्तु दूसरे की उन्नति नहीं होती (present continuous time)। मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मैं तुम सब से अधिक अन्य अन्य भाषा में बोलता हूँ। परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हज़ार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है कि औरों के सिखाने के लिए बुद्धि से पाँच ही बातें कहूं।" जब पौलुस "बोलने, प्रार्थना करने और समझ के साथ गीत गाने के बारे में बात करता है" तो इसका केवल एक ही मतलब हो सकता है कि वह कलीसिया में ऐसी भाषा का इस्तेमाल करता है जिसे सब समझ सकें!

पौलुस अन्यान्य भाषा में बोलने वाले, प्रार्थना करने और अज्ञात भाषा में गीत गाने वाले मसीहियों से कहता है कि वे जब अन्यान्य भाषा में प्रार्थना करें तो परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वे जिन बातों को आत्मा में होकर बोले रहें हैं उन बातों को अपनी मात्र में बता सकें। उन्हें अन्यान्य भाषा में सारी बात कहने के बाद उसका अनुवाद करके नहीं बताना चाहिए, वरन इसका उल्टा उन्हें तुरन्त समझ के साथ बताना चाहिए कि वे असल में अपनी आत्मा में होकर क्या कहना मांग रहे थे।

क्योंकि मनुष्य की आत्मा पूरी तरह से उसके नियन्त्रण में होती है(1कुरिन्थियों 14:32), वे चाहें तो अन्यान्य भाषा में न बोल कर मनुष्य को समझ में आने वाली भाषा का चुनाव कर सकते हैं जिससे हर एक सुनने वाले जन की उन्नति हो सके(1कुरिन्थियों 14:19)। केवल इस तरीके से सभा में उपस्थित सभी लोगों की उन्नति हो सकती है।(1कुरिन्थियों 14:12)।

16. अन्यान्य भाषा का अनुवाद।

(1) अन्यान्य भाषा का अनुवाद (1कुरिन्थियों 12:10,30 14:27-28)।

- यह न केवल लोगों की ज्ञात भाषा को *समझने,उनका अनुवाद करने और उसका अर्थ बताने की एक असाधारण योग्यता हैं*, वरन स्वर्गदूतों की अज्ञात भाषा को भी, ताकि कलीसिया में सुनने वाले सभी लोगों की उन्नति हो सके। यह वरदान मनुष्यों द्वारा बोले जाने वाली भाषा और मनुष्य की समझ में न आने वाली स्वर्गदूतों की अज्ञात भाषा, दोनो के लिए पूरक है। जिन लोगों को यह आत्मिक वरदान प्राप्त है वे:
- उन बातों का अनुवाद कर सकते हैं जो अज्ञात मानवीय भाषा में कही गयी हो।

- पहचान सकते हैं कि अन्यान्य भाषा बोलने वाला यह मसीही जन सच्चा या झूठा है।
- परख सकते हें कि जो बाते वह कह रहे हैं उससे कलीसिया की उन्नति होगी या उसका नाश होगा।

(2) पारस्परिक तौर पर आत्मा और मन से बोलना।

यह तो स्पष्ट है कि कुरिन्थियों की कलीसिया में जितने लोग अन्यान्य भाषा में बोला करते थे उनमें से किसी के पास भाषा का अनुवाद करने का कोई आत्मिक वरदान नहीं था। (1कुरिन्थियों 14:13)।

यह केवल उस व्यक्ति के लिए सम्भव था जिसे वास्तव में अन्यान्य भाषा में बोलने तथा उसका अनुवाद करने का वरदान मिला हो, लेकिन उसके लिए *उसे तुरन्त बाद उन बातों को अपने मन अर्थात अपनी मात्रभाषा में बोलने की जरूरत होती है जिन्हें उसने अपनी आत्मा में बोला था*। जिन बातों को वह आत्मा में अन्यान्य भाषा में बोलना चाहता था उन्हीं बातों को उसे अपनी भाषा में प्रगट करना होगा। (1 कुरिन्थियों 14:13-19)!

लेकिन यह योग्यता अपने आप से उत्पन्न होने वाली नहीं है(1 कुरिन्थियों 14:5,13)। सामान्य तौर पर, यदि मण्डली में कोई अन्यान्य भाषा का अनुवाद करने वाला उपस्थित हो तो सब उसे निश्चय तौर पर जानते होगें, कि उस जन को अन्यान्य भाषा का अनुवाद करने का वरदान मिला है और वह व्यक्ति तथा अन्यान्य भाषा बोलने वाला एक ही जन नहीं होगा(1 कुरिन्थियों 12:10;14:27-28)। लेकिन यदि मण्डली में कोई अन्यान्य भाषा का अनुवाद करने वाला न हो या वह अनुवाद करने का इच्छुक न हो ता, प्रेरित पौलुस कहता है कि इस दशा में कलीसिया में अन्यान्य भाषा का उपयोग न किया जाए(1 कुरिन्थियों 14:28)।

(3) अन्यान्य भाषा में बात करने के लिए प्रेरिताई की सीमाएं।

इसके अलावा पौलुस स्पष्ट तौर पर यह भी कहता है कि यदि मण्डली में अनुवाद करने वाला मौजूद और इच्छुक हो तो, कलीसिया में केवल तीन लोग ही बारी बारी करके अन्यान्य भाषा में बात करें, लेकिन वह भी उस दशा में बोली जाएं जब अनुवाद करने वाला तुरन्त उठकर उन बातों को अनुवाद करे!

वह यह भी कहता है कि लोग कलीसिया की सभा में एक एक करके लगातार अज्ञान भाषा या अन्यान्य भाषा में न बोलें(1कुरिन्थियों 14:27)। और वह कलीसिया में महिलाओं को कलीसिया में बोलने (भविष्यद्वाणी करने या अन्यान्य भाषा में बोलने)के लिए मना करता है (1 कुरिन्थियों 14:27)। और इसके अलावा वह महिलाओं को कलीसिया की आधिकारिक सभाओं में बोलने(भविष्यद्वाणी करने या अन्यान्य भाषा में बोलने)के लिए मना करता है (1 कुरिन्थियों 14:34-38)।

17. ब्रह्मचर्य।

ब्रह्मचर्य (1 कुरिन्थियों 7:7,32-35; मत्ती 19:10-12) *परमेश्वर व उसके राज्य की सेवा करने के लिए अविवाहित रहने का अटल समर्पण एक असाधारण योग्यता, चुनाव और बुलाहट है।*

अन्य आत्मिक वरदानों के समान ही, यह आत्मिक वरदान भी परमेश्वर द्वारा स्थायी तौर पर या कुछ समय के लिए दिया जा सकता है अर्थात जब तक परमेश्वर को यह जरूरी लगे।